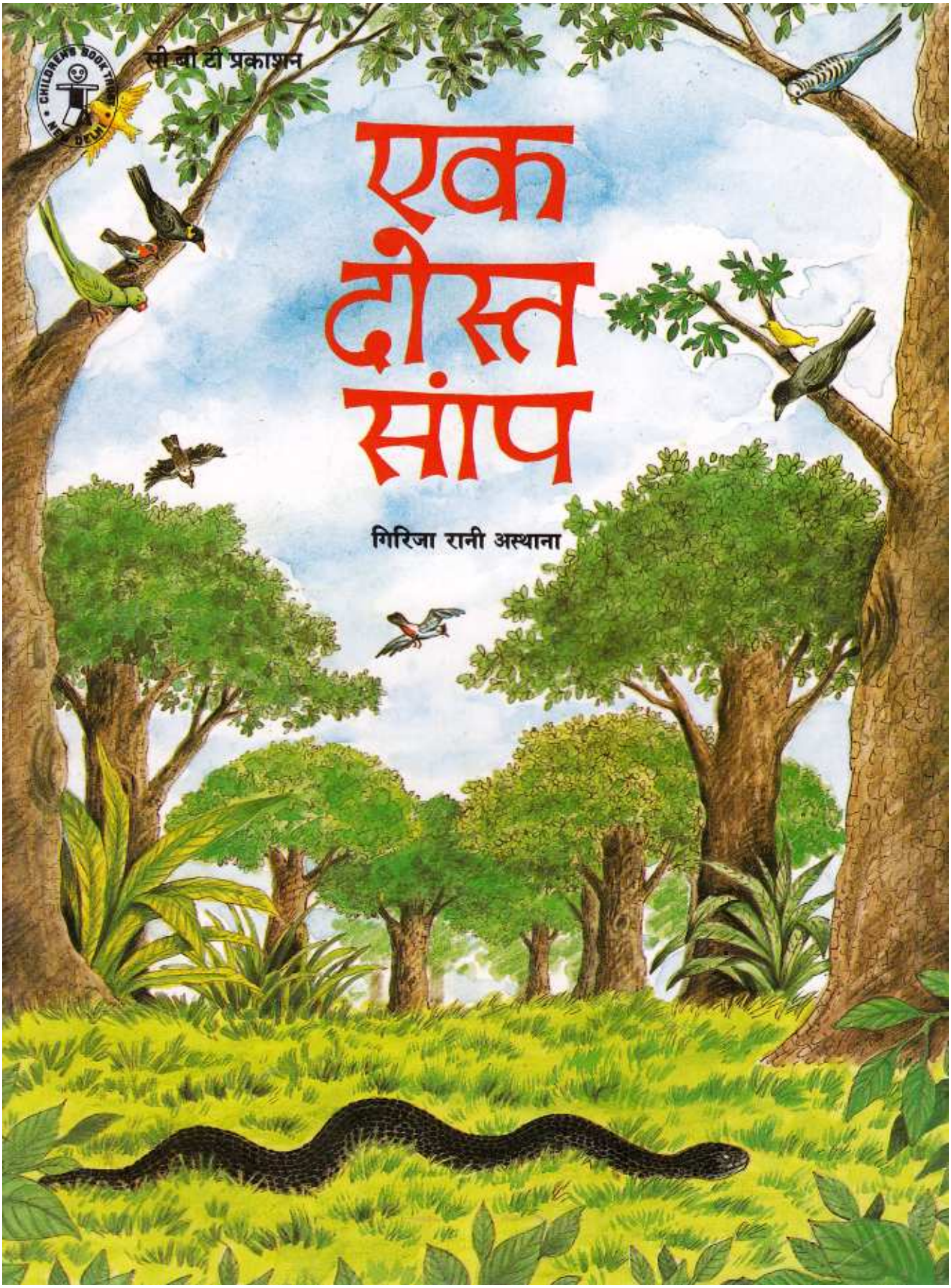

सी बी टी प्रकाशन

एक दोस्त सांप

गिरिजा रानी अस्थाना

एक दोस्त सांप

लेखन : गिरिजा रानी अस्थाना
चित्रांकन : क्षितीश चटर्जी

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

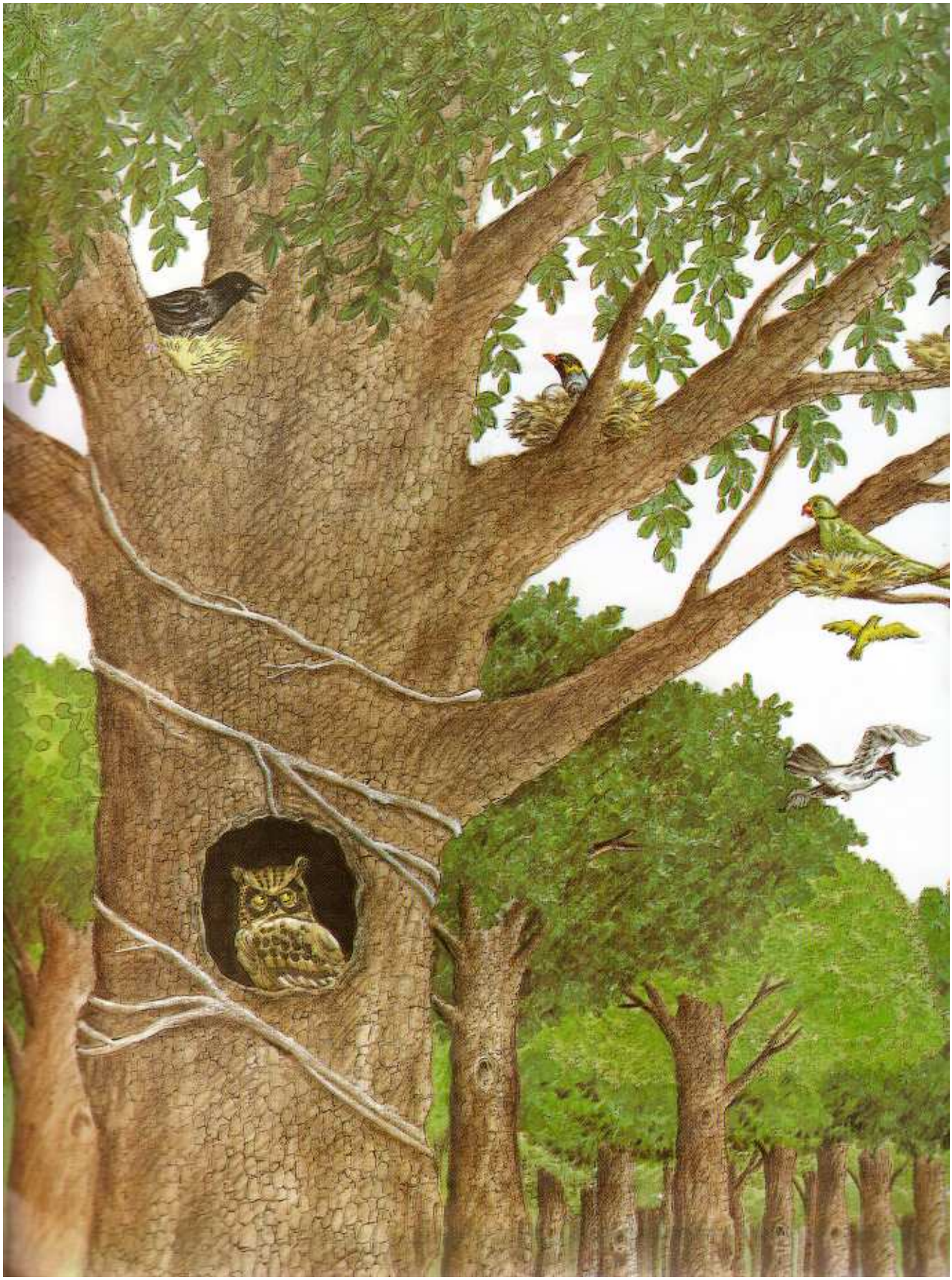

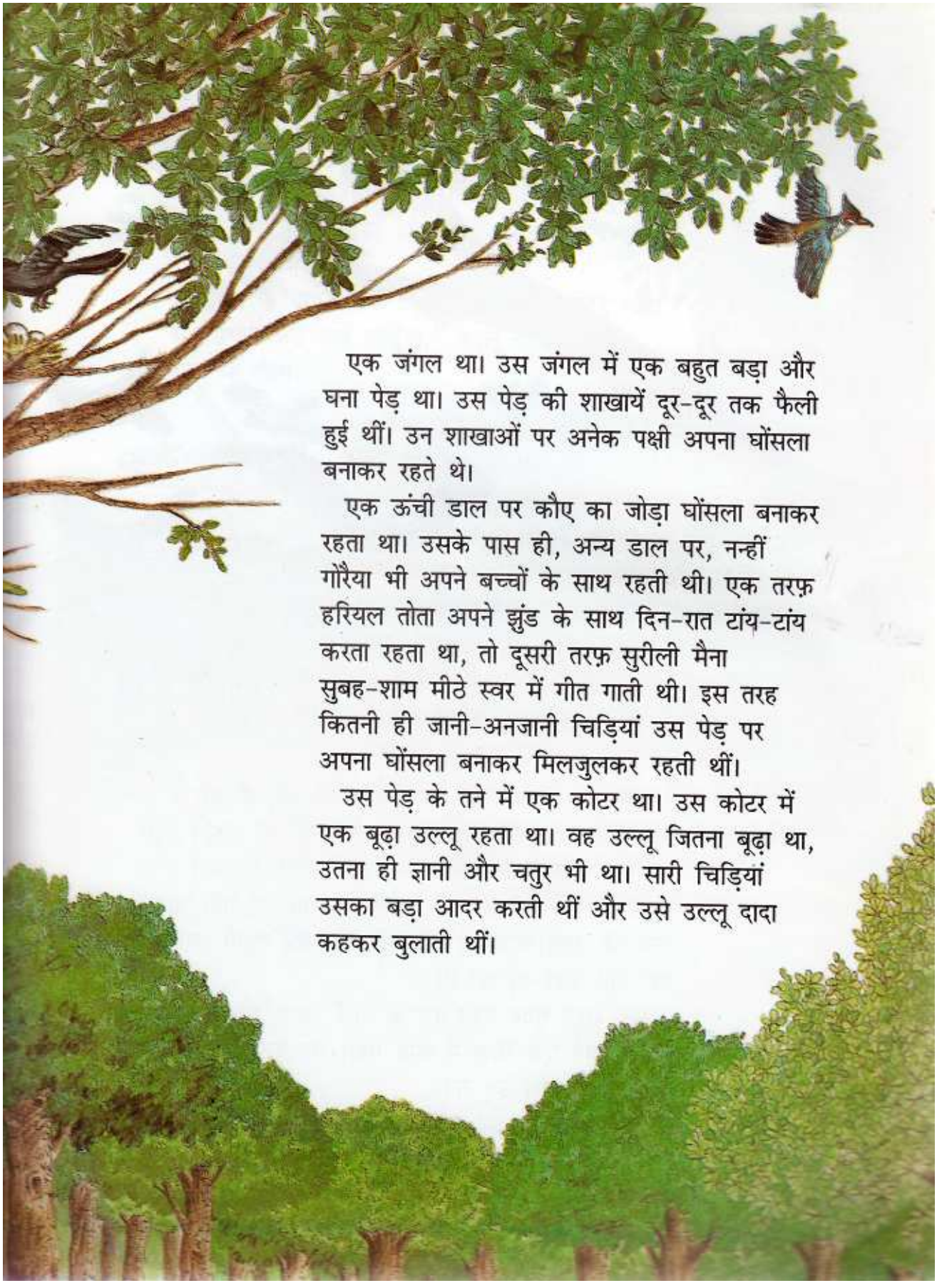

एक जंगल था। उस जंगल में एक बहुत बड़ा और घना पेड़ था। उस पेड़ की शाखायें दूर-दूर तक फैली हुई थीं। उन शाखाओं पर अनेक पक्षी अपना घोंसला बनाकर रहते थे।

एक ऊंची डाल पर कौए का जोड़ा घोंसला बनाकर रहता था। उसके पास ही, अन्य डाल पर, नन्हीं गौरैया भी अपने बच्चों के साथ रहती थी। एक तरफ़ हरियल तोता अपने झुंड के साथ दिन-रात टांय-टांय करता रहता था, तो दूसरी तरफ़ सुरीली मैना सुबह-शाम मीठे स्वर में गीत गाती थी। इस तरह कितनी ही जानी-अनजानी चिड़ियां उस पेड़ पर अपना घोंसला बनाकर मिलजुलकर रहती थीं।

उस पेड़ के तने में एक कोटर था। उस कोटर में एक बूढ़ा उल्लू रहता था। वह उल्लू जितना बूढ़ा था, उतना ही ज्ञानी और चतुर भी था। सारी चिड़ियां उसका बड़ा आदर करती थीं और उसे उल्लू दादा कहकर बुलाती थीं।

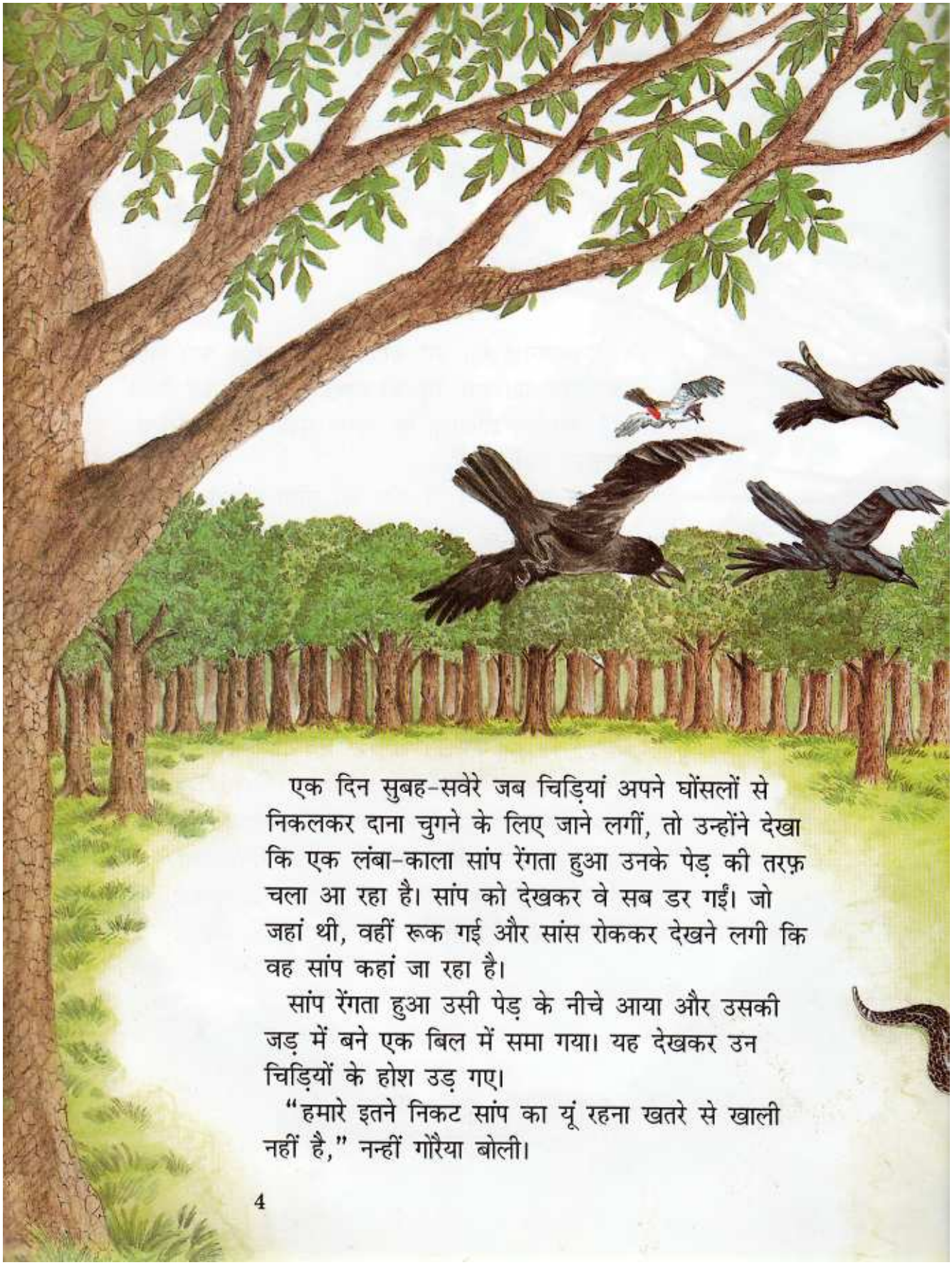

एक दिन सुबह-सवेरे जब चिड़ियां अपने घोंसलों से निकलकर दाना चुगने के लिए जाने लगीं, तो उन्होंने देखा कि एक लंबा-काला सांप रेंगता हुआ उनके पेड़ की तरफ़ चला आ रहा है। सांप को देखकर वे सब डर गईं। जो जहां थी, वहीं रूक गई और सांस रोककर देखने लगी कि वह सांप कहां जा रहा है।

सांप रेंगता हुआ उसी पेड़ के नीचे आया और उसकी जड़ में बने एक बिल में समा गया। यह देखकर उन चिड़ियों के होश उड़ गए।

"हमारे इतने निकट सांप का यूं रहना खतरे से खाली नहीं है," नन्हीं गौरैया बोली।

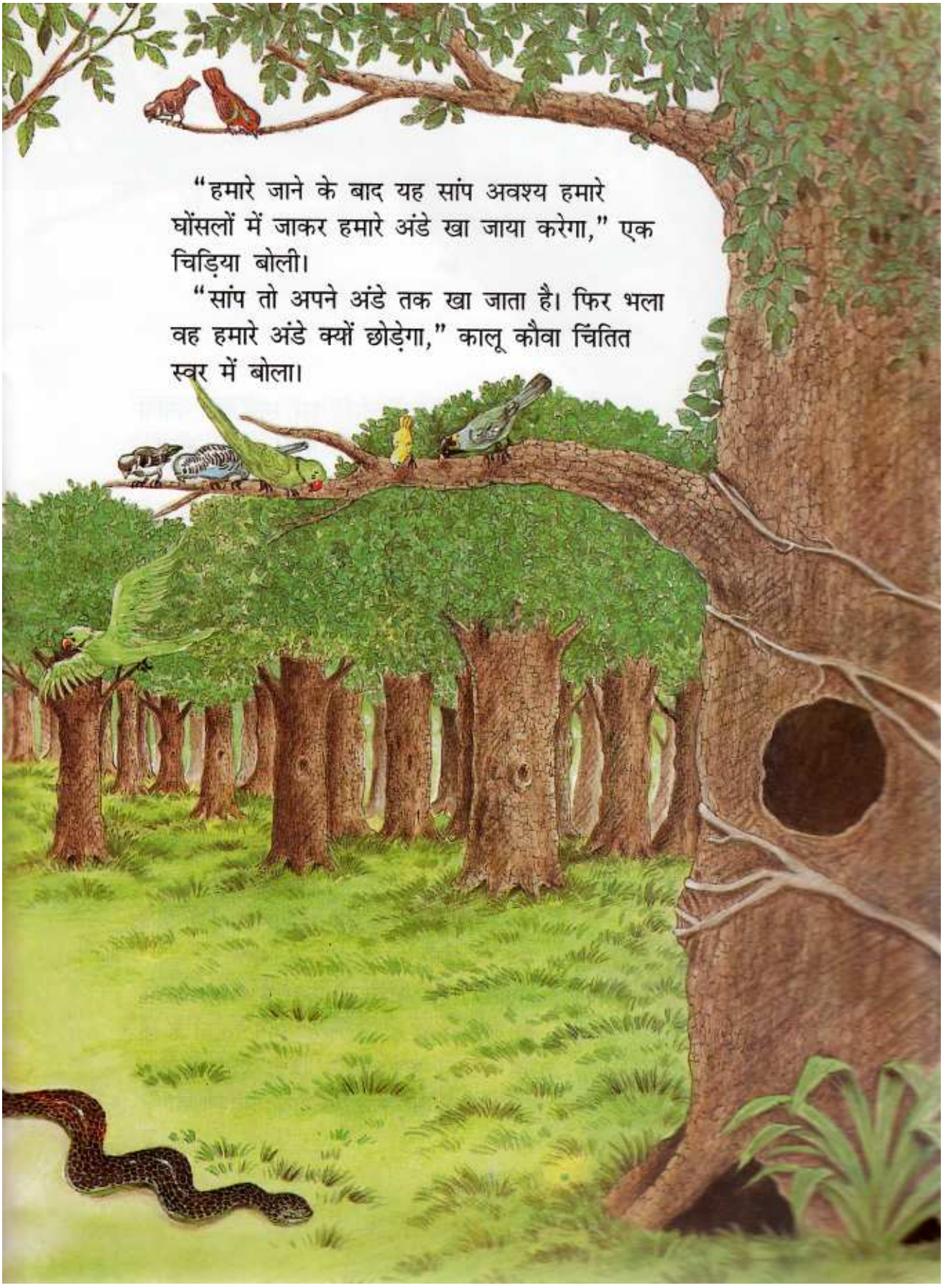

"हमारे जाने के बाद यह सांप अवश्य हमारे घोंसलों में जाकर हमारे अंडे खा जाया करेगा," एक चिड़िया बोली।

"सांप तो अपने अंडे तक खा जाता है। फिर भला वह हमारे अंडे क्यों छोड़ेगा," कालू कौवा चिंतित स्वर में बोला।

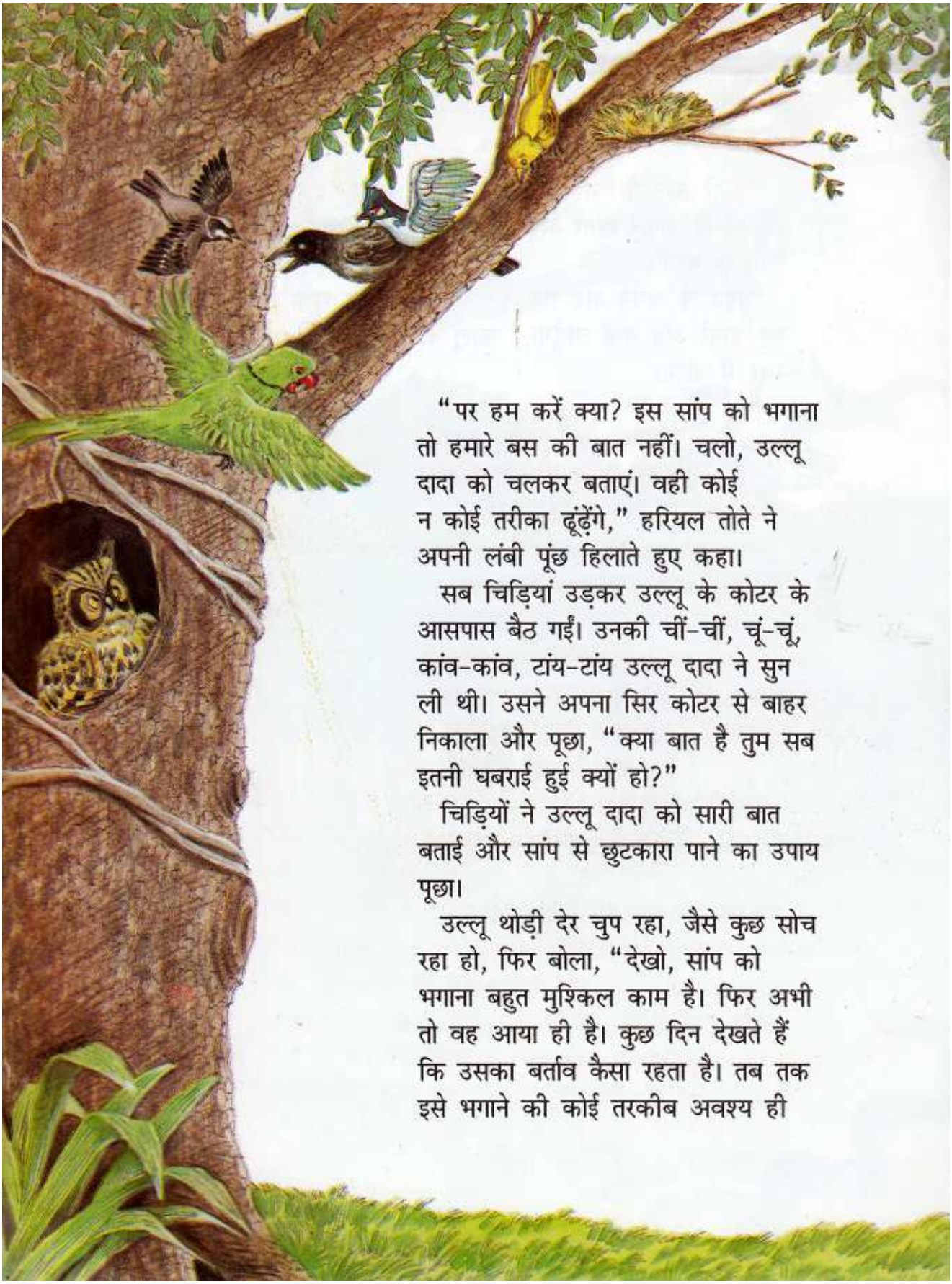

"पर हम करें क्या? इस सांप को भगाना तो हमारे बस की बात नहीं। चलो, उल्लू दादा को चलकर बताएं। वही कोई न कोई तरीका ढूंढ़ेंगे," हरियल तोते ने अपनी लंबी पूंछ हिलाते हुए कहा।

सब चिड़ियां उड़कर उल्लू के कोटर के आसपास बैठ गईं। उनकी चीं-चीं, चूं-चूं, कांव-कांव, टांय-टांय उल्लू दादा ने सुन ली थी। उसने अपना सिर कोटर से बाहर निकाला और पूछा, "क्या बात है तुम सब इतनी घबराई हुई क्यों हो?"

चिड़ियों ने उल्लू दादा को सारी बात बताई और सांप से छुटकारा पाने का उपाय पूछा।

उल्लू थोड़ी देर चुप रहा, जैसे कुछ सोच रहा हो, फिर बोला, "देखो, सांप को भगाना बहुत मुश्किल काम है। फिर अभी तो वह आया ही है। कुछ दिन देखते हैं कि उसका बर्ताव कैसा रहता है। तब तक इसे भगाने की कोई तरकीब अवश्य ही

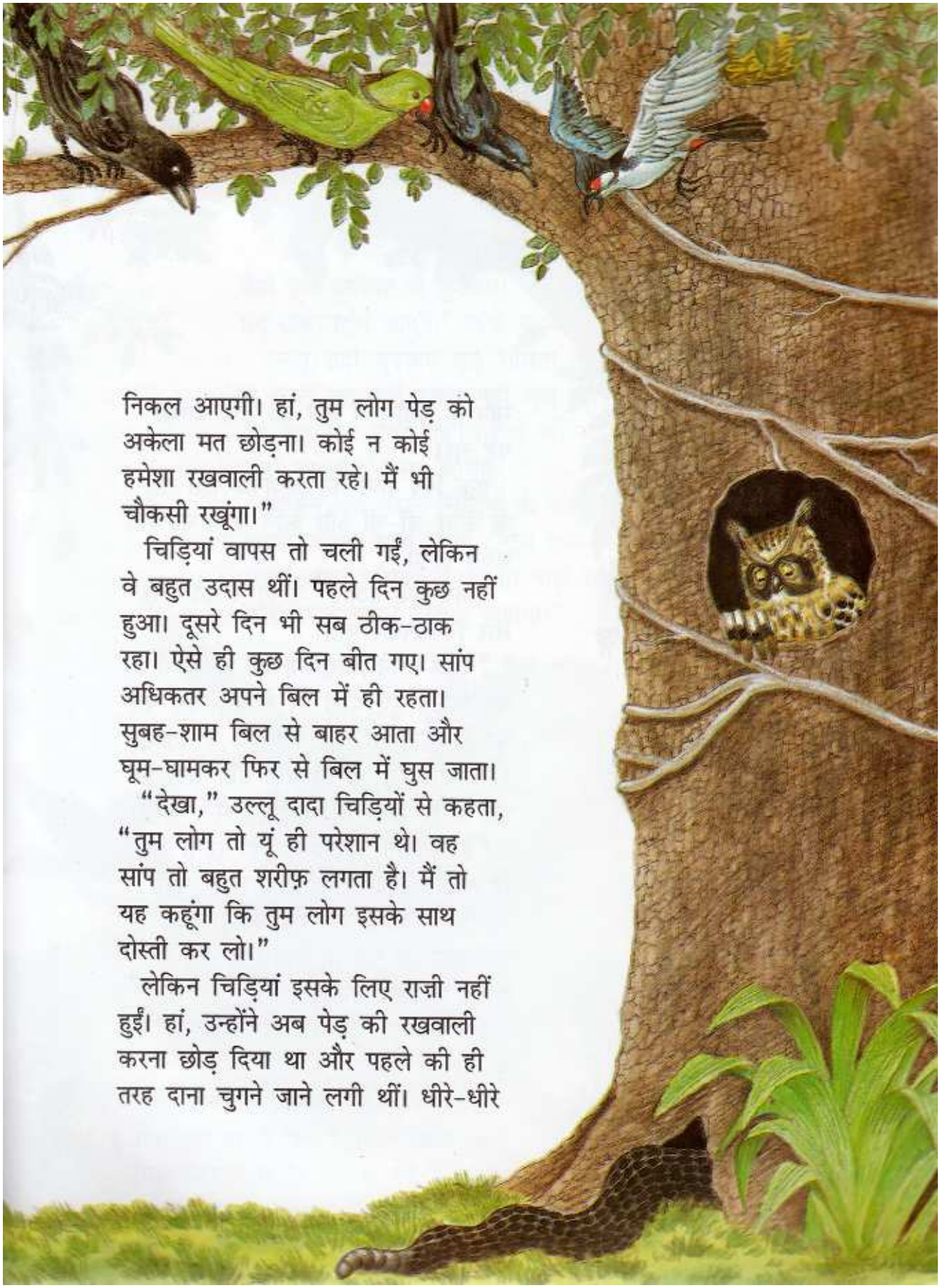

निकल आएगी। हां, तुम लोग पेड़ को अकेला मत छोड़ना। कोई न कोई हमेशा रखवाली करता रहे। मैं भी चौकसी रखूंगा।"

चिड़ियां वापस तो चली गईं, लेकिन वे बहुत उदास थीं। पहले दिन कुछ नहीं हुआ। दूसरे दिन भी सब ठीक-ठाक रहा। ऐसे ही कुछ दिन बीत गए। सांप अधिकतर अपने बिल में ही रहता। सुबह-शाम बिल से बाहर आता और घूम-घामकर फिर से बिल में घुस जाता।

"देखा," उल्लू दादा चिड़ियों से कहता, "तुम लोग तो यूं ही परेशान थे। वह सांप तो बहुत शरीफ़ लगता है। मैं तो यह कहूंगा कि तुम लोग इसके साथ दोस्ती कर लो।"

लेकिन चिड़ियां इसके लिए राज़ी नहीं हुईं। हां, उन्होंने अब पेड़ की रखवाली करना छोड़ दिया था और पहले की ही तरह दाना चुगने जाने लगी थीं। धीरे-धीरे

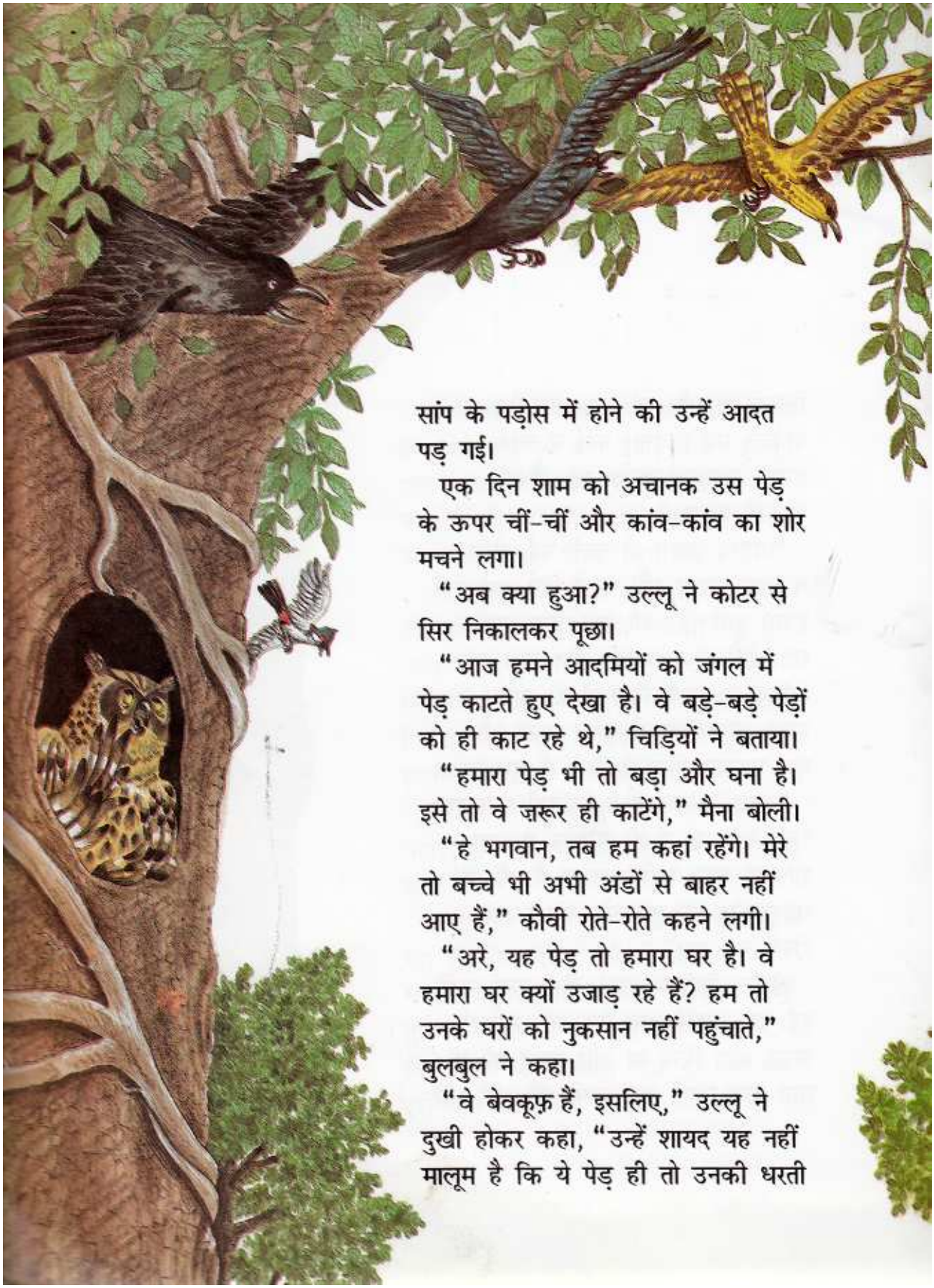

सांप के पड़ोस में होने की उन्हें आदत पड़ गई।

एक दिन शाम को अचानक उस पेड़ के ऊपर चीं-चीं और कांव-कांव का शोर मचने लगा।

"अब क्या हुआ?" उल्लू ने कोटर से सिर निकालकर पूछा।

"आज हमने आदमियों को जंगल में पेड़ काटते हुए देखा है। वे बड़े-बड़े पेड़ों को ही काट रहे थे," चिड़ियों ने बताया।

"हमारा पेड़ भी तो बड़ा और घना है। इसे तो वे ज़रूर ही काटेंगे," मैना बोली।

"हे भगवान, तब हम कहां रहेंगे। मेरे तो बच्चे भी अभी अंडों से बाहर नहीं आए हैं," कौवी रोते-रोते कहने लगी।

"अरे, यह पेड़ तो हमारा घर है। वे हमारा घर क्यों उजाड़ रहे हैं? हम तो उनके घरों को नुकसान नहीं पहुंचाते," बुलबुल ने कहा।

"वे बेवकूफ़ हैं, इसलिए," उल्लू ने दुखी होकर कहा, "उन्हें शायद यह नहीं मालूम है कि ये पेड़ ही तो उनकी धरती

को हरा-भरा रखते हैं। अगर वे इन्हें ही काट देंगे, तो उनकी यह हरी-भरी धरती रेगिस्तान बन जाएगी।"

"अपने किए की सज़ा तो वे भुगत ही लेंगे, लेकिन हम कैसे इस मुसीबत से छुटकारा पाएं? कल सवेरे तक वे हमारे पेड़ तक पहुंच जाएंगे," लंबी पूंछवाला हरियल तोता बोला।

उल्लू दादा चुपचाप कुछ सोचता रहा। उसे भी इस आफ़त से बचने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। 'सचमुच अगर यह पेड़ कट गया, तो चिड़ियों की यह इतनी बड़ी बिरादरी कहां जाएगी?' उसने सोचा।

लेकिन जब उसने चिड़ियों के उतरे हुए मुंह देखे तो ढांढ़स बंधाता हुआ बोला, "तुम लोग घबराओ नहीं। अपने-अपने घोंसलों में जाओ। कल सुबह तक कोई न कोई उपाय ज़रूर निकल आएगा।"

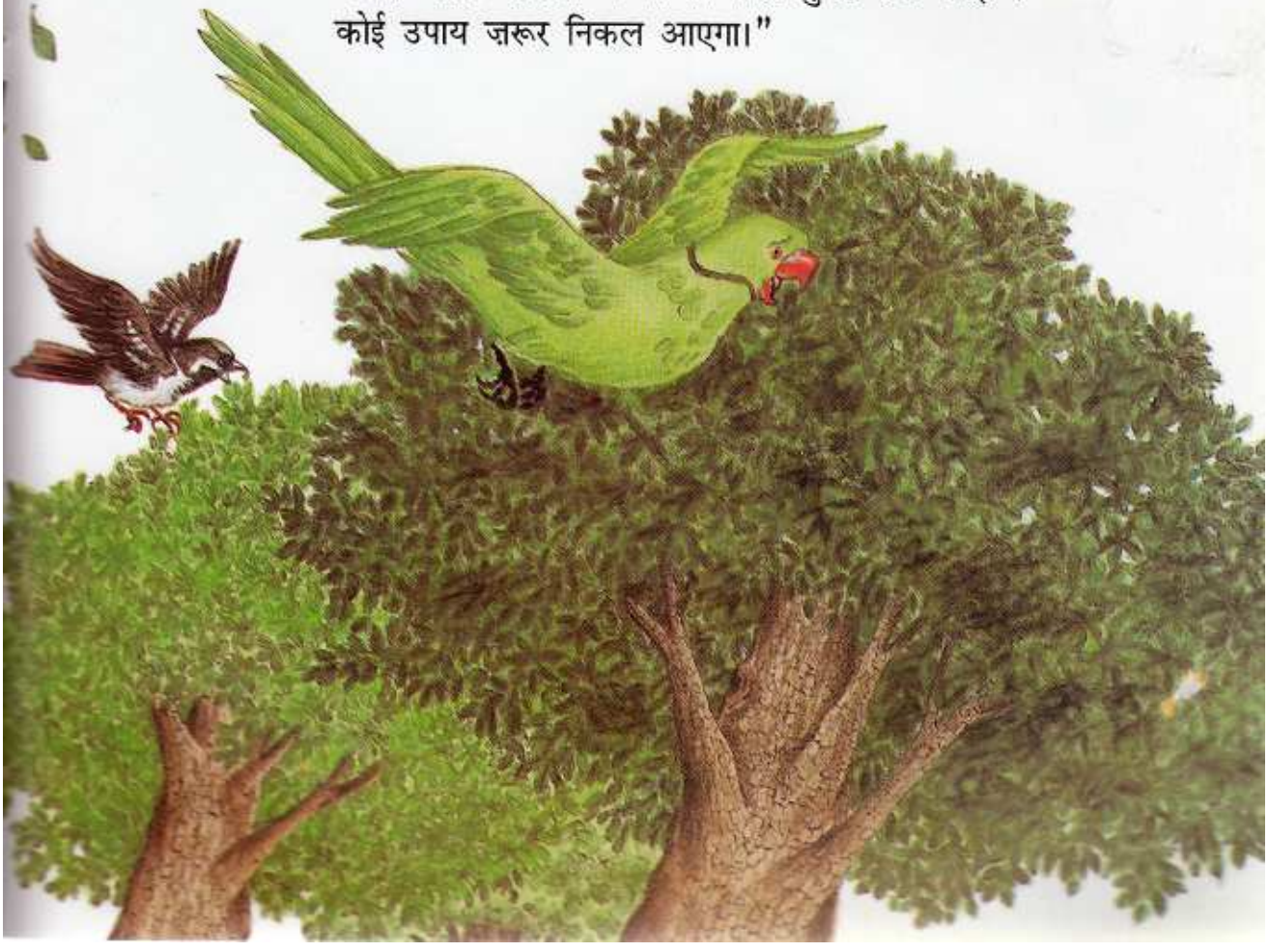

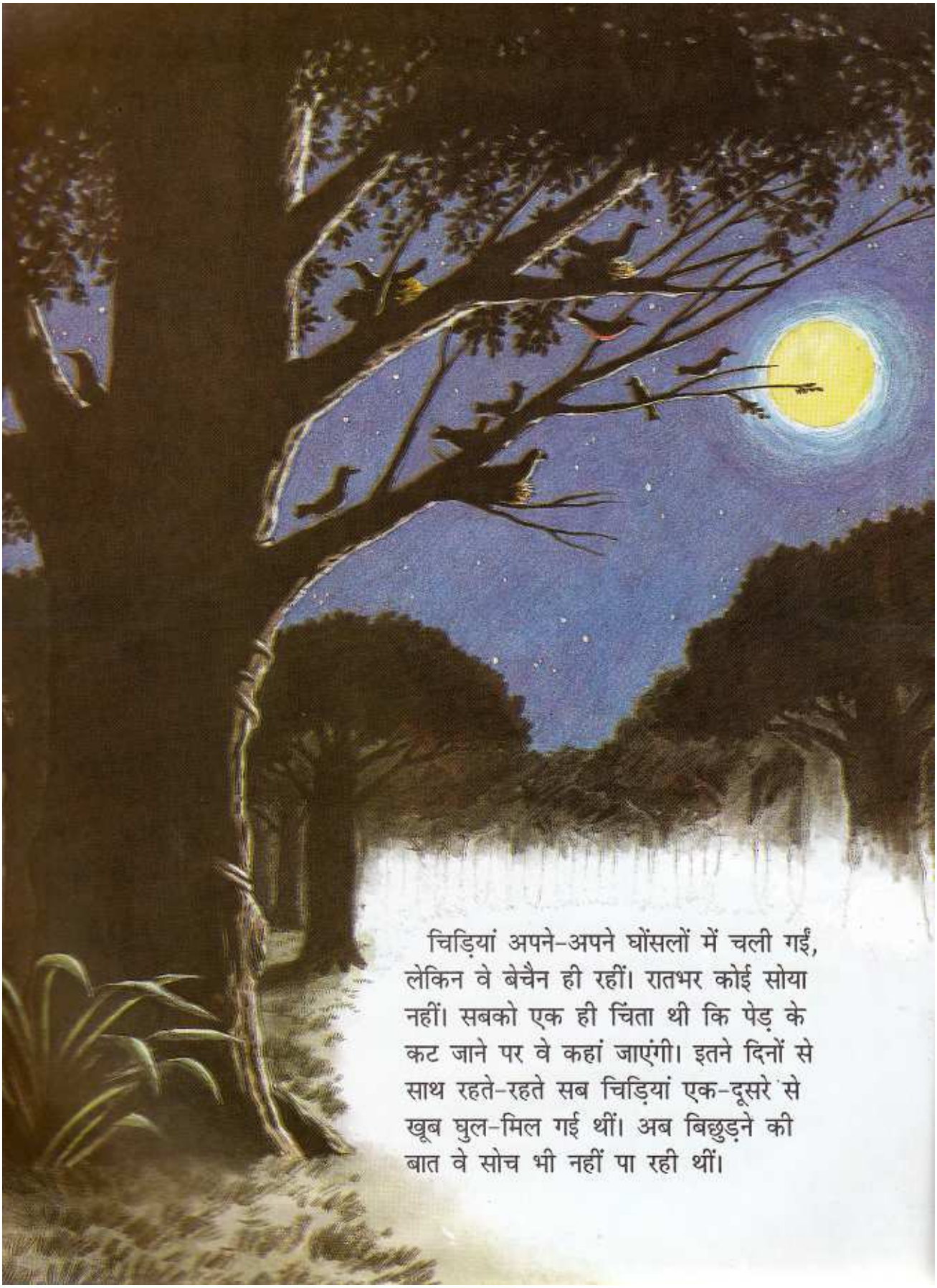

चिड़ियां अपने-अपने घोंसलों में चली गईं, लेकिन वे बेचैन ही रहीं। रातभर कोई सोया नहीं। सबको एक ही चिंता थी कि पेड़ के कट जाने पर वे कहां जाएंगी। इतने दिनों से साथ रहते-रहते सब चिड़ियां एक-दूसरे से खूब घुल-मिल गई थीं। अब बिछुड़ने की बात वे सोच भी नहीं पा रही थीं।

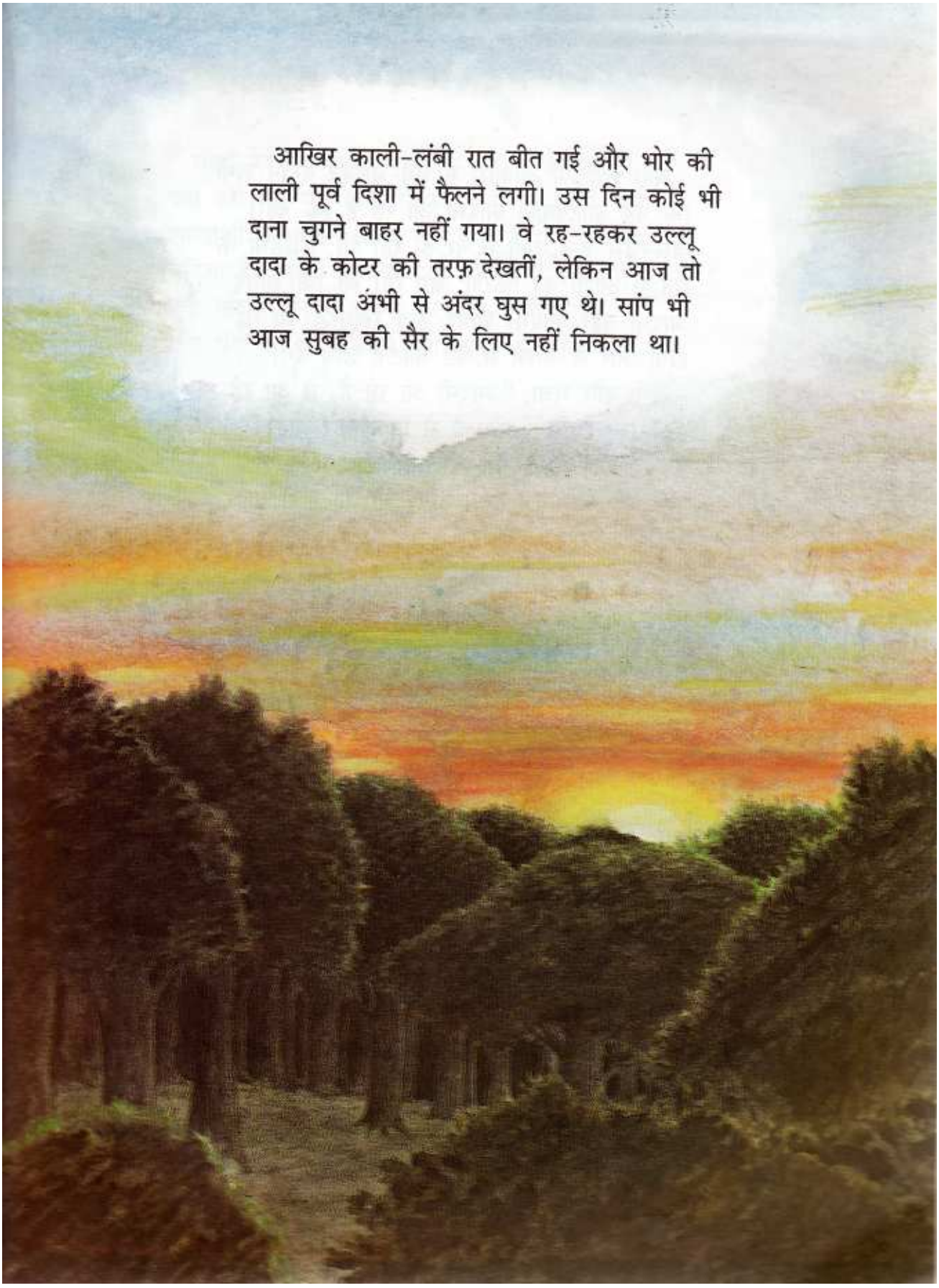

आखिर काली-लंबी रात बीत गई और भोर की लाली पूर्व दिशा में फैलने लगी। उस दिन कोई भी दाना चुगने बाहर नहीं गया। वे रह-रहकर उल्लू दादा के कोटर की तरफ़ देखतीं, लेकिन आज तो उल्लू दादा अभी से अंदर घुस गए थे। सांप भी आज सुबह की सैर के लिए नहीं निकला था।

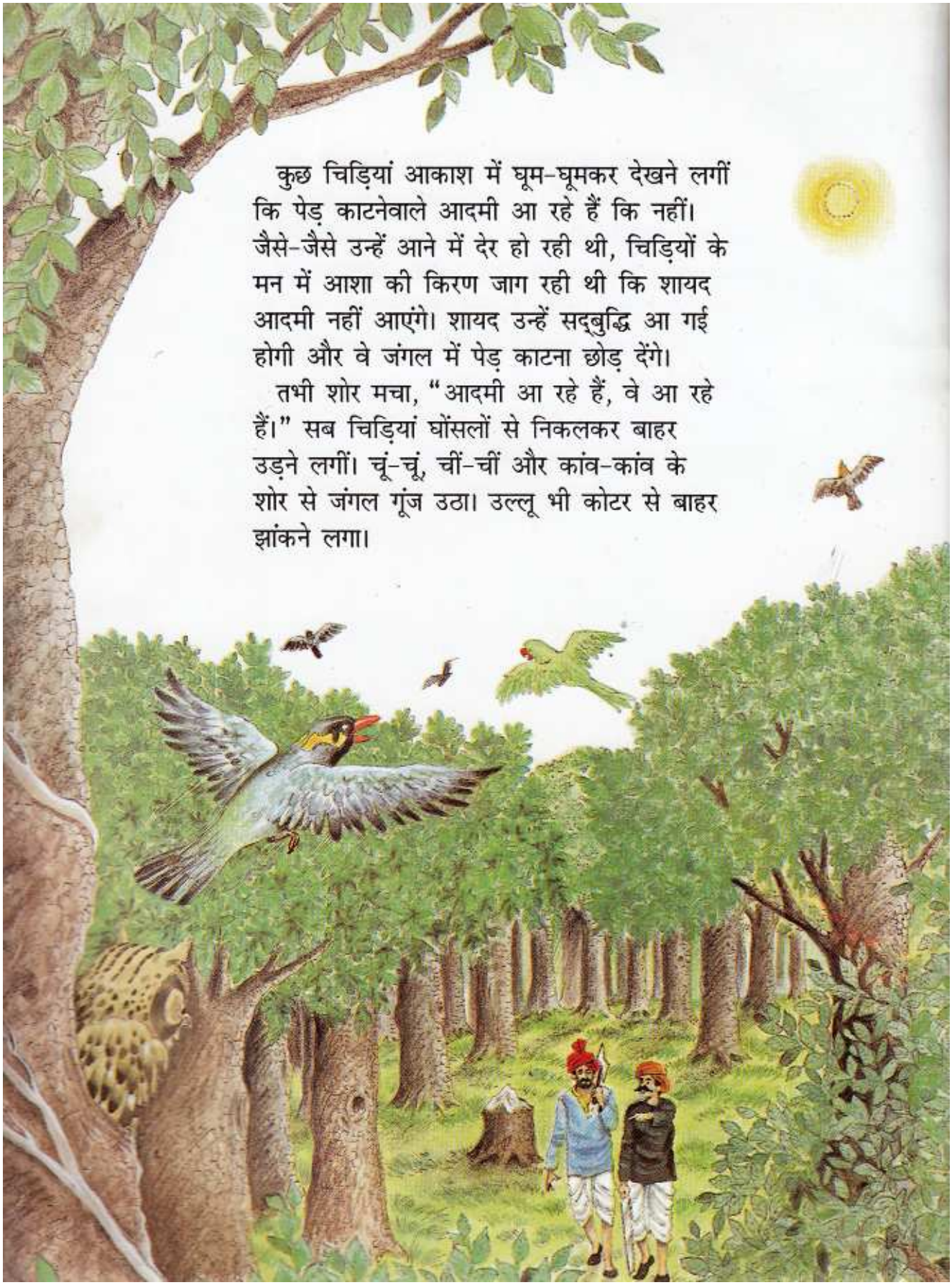

कुछ चिड़ियां आकाश में घूम-घूमकर देखने लगीं कि पेड़ काटनेवाले आदमी आ रहे हैं कि नहीं। जैसे-जैसे उन्हें आने में देर हो रही थी, चिड़ियों के मन में आशा की किरण जाग रही थी कि शायद आदमी नहीं आएंगे। शायद उन्हें सद्‌बुद्धि आ गई होगी और वे जंगल में पेड़ काटना छोड़ देंगे।

तभी शोर मचा, "आदमी आ रहे हैं, वे आ रहे हैं।" सब चिड़ियां घोंसलों से निकलकर बाहर उड़ने लगीं। चूं-चूं, चीं-चीं और कांव-कांव के शोर से जंगल गूंज उठा। उल्लू भी कोटर से बाहर झांकने लगा।

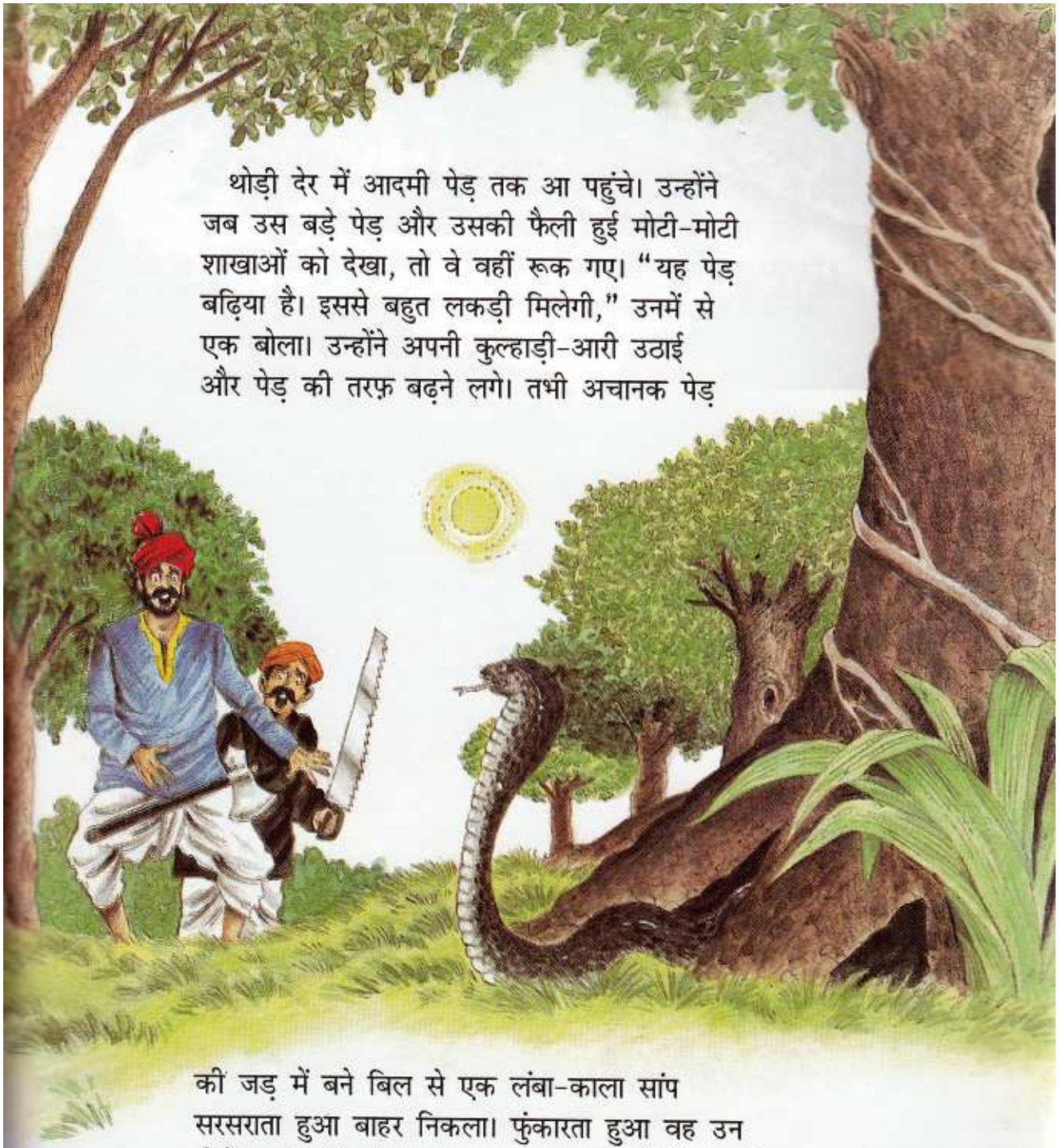

थोड़ी देर में आदमी पेड़ तक आ पहुंचे। उन्होंने जब उस बड़े पेड़ और उसकी फैली हुई मोटी-मोटी शाखाओं को देखा, तो वे वहीं रूक गए। "यह पेड़ बढ़िया है। इससे बहुत लकड़ी मिलेगी," उनमें से एक बोला। उन्होंने अपनी कुल्हाड़ी-आरी उठाई और पेड़ की तरफ़ बढ़ने लगे। तभी अचानक पेड़ की जड़ में बने बिल से एक लंबा-काला सांप सरसराता हुआ बाहर निकला। फुंकारता हुआ वह उन दोनों आदमियों की तरफ़ बढ़ा। उन आदमियों के हाथों से कुल्हाड़ी और आरी छूट गई। सांप अपना फन ताने उनकी ओर झपटा। अब तो उन आदमियों के होश

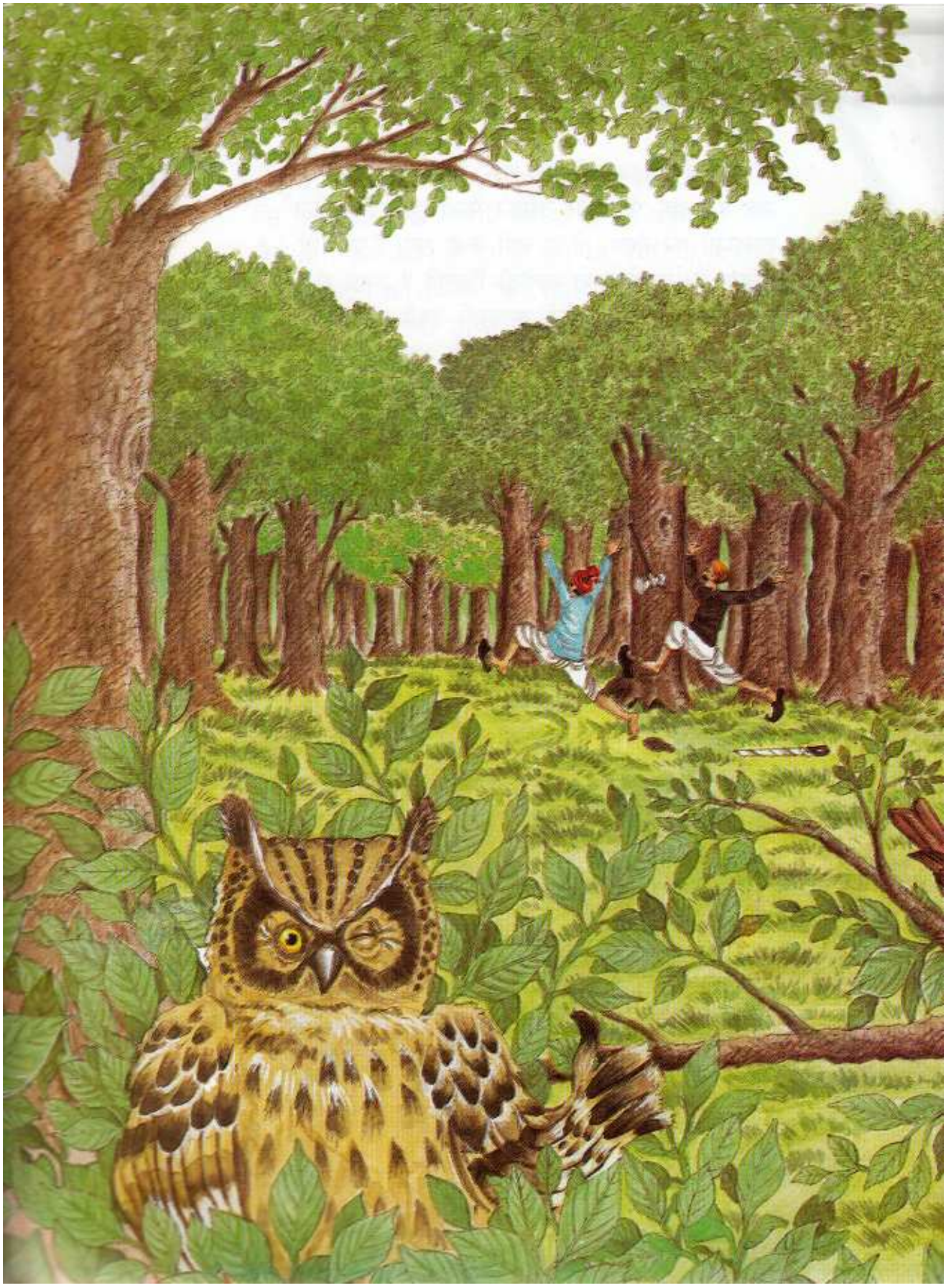

उड़ गए। वे वहां से भाग खड़े हुए।

चिड़ियों ने जब उन आदमियों को भागते हुए देखा, तो मारे खुशी के पागल होने लगीं। चूं-चूं, चीं-चीं और कांव-कांव के शोर से उन्होंने पूरा जंगल सिर पर उठा लिया। उल्लू दादा चुपचाप मुस्कुरा रहा था। जब आदमी बहुत दूर निकल गए, तब सांप चुपचाप अपने बिल की तरफ़ चल दिया।

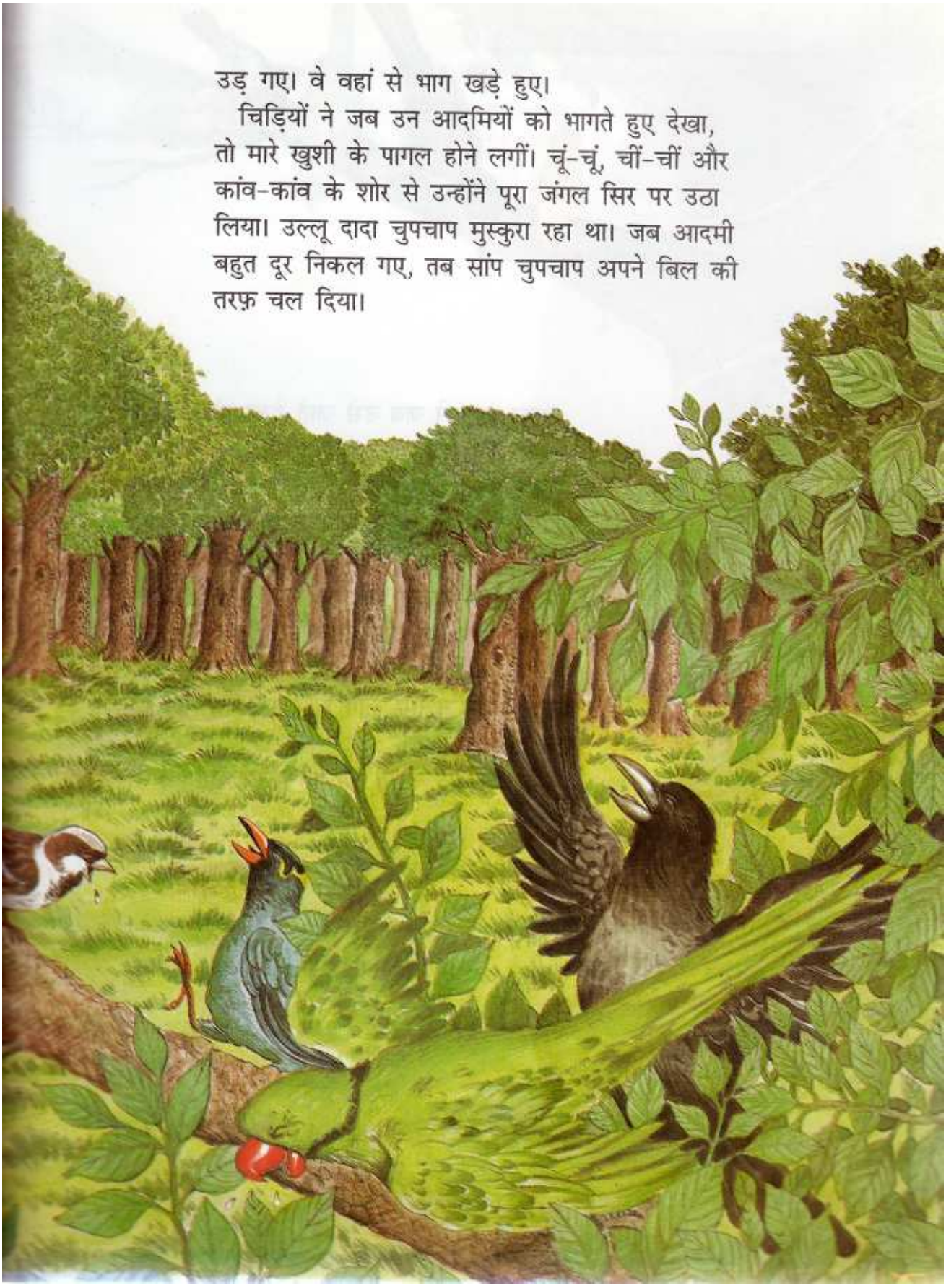

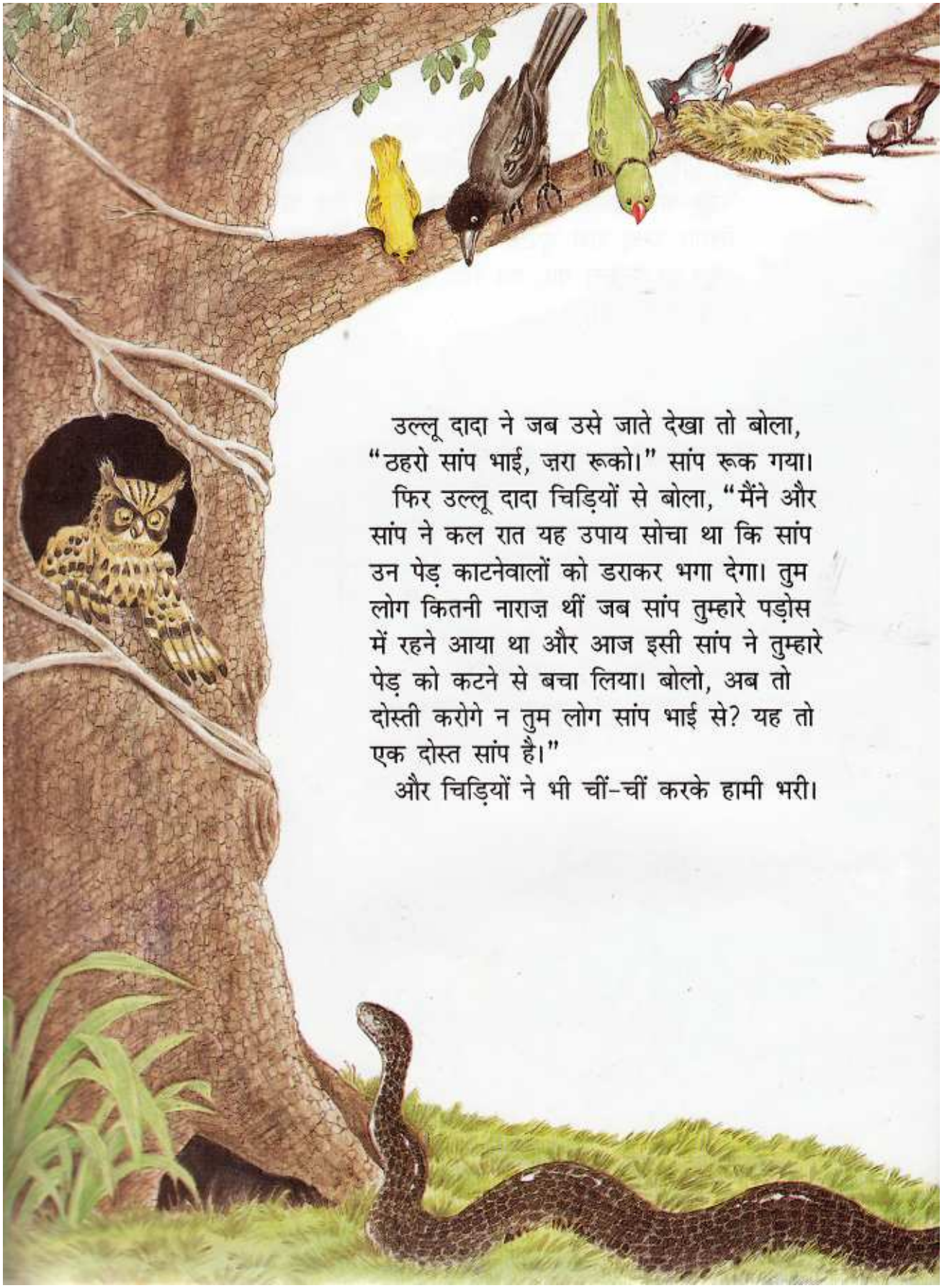

उल्लू दादा ने जब उसे जाते देखा तो बोला, "ठहरो सांप भाई, ज़रा रूको।" सांप रूक गया।

फिर उल्लू दादा चिड़ियों से बोला, "मैंने और सांप ने कल रात यह उपाय सोचा था कि सांप उन पेड़ काटनेवालों को डराकर भगा देगा। तुम लोग कितनी नाराज़ थीं जब सांप तुम्हारे पड़ोस में रहने आया था और आज इसी सांप ने तुम्हारे पेड़ को कटने से बचा लिया। बोलो, अब तो दोस्ती करोगे न तुम लोग सांप भाई से? यह तो एक दोस्त सांप है।"

और चिड़ियों ने भी चीं-चीं करके हामी भरी।

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित बाल-साहित्य लेखन प्रतियोगिता के चित्र-पुस्तक वर्ग में **एक दोस्त सांप** को प्रथम पुरस्कार मिला था। सी बी टी ने लेखिका की कुछ अन्य रचनाओं का भी अपनी पुस्तकों में समावेश किया है।

EK DOST SAANP

संपादन : सुभद्रा मालवी एवं सुमन बाजपेयी

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट 1993
पुनर्मुद्रण 1997, 1998, 1999, 2001, 2002, 2003 (दो बार),
2004, 2005, 2006, 2007, 2009, 2010, 2011 (दो बार), 2012.

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश या पूरे का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से, इलेक्ट्रानिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकार्डिंग या किसी और ढंग से, प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित एवं न्यास के इंद्रप्रस्थ प्रेस में मुद्रित। दूरभाष : 23316970-74 फैक्स : 23721090
ई-मेल : cbtnd@cbtnd.com वेबसाइट : www.childrensbooktrust.com

ISBN 81-7011-684-8

₹25.00 H 238